Global Vision 2000 - Conference
by Renu Gupta

अगस्त के थम सप्ताह मे ं वाशिंगटन डी सी में विश्व हिन्दू परिषद (अमेरिका) ने Global Vision 2000 नाम की एक conference का आयोजन किया था । यह सभा स्वामी विवेकानन्द की ऐतिहासिक अमेरिका यात्रा एवं उनके शिकागो धर्म सम्मेलन में वेदान्तिक संदेश विश्व को देने की शताब्दी के उपलक्ष में की गई थी । विश्व भर के अनेक संतों एवं विानों ने इसमें भाग लिया । करीब 12,000 धर्म जिग्यासु इस सभा में उपस्थित थे । इस सभा में भाग लेना स्वयं में एक उपलब्धि है । जिन्होंने इसमें भाग लिया वो जानते हैं कि उन्होंने ा पाया एवं जो इससे वंचित रहे वो नहिं जानते कि उन्होंने ा खोया । इस सभा से आने के बाद जो भाव मुझमें आये वे इस रचना में स्त ुत कर रही हूँ ।

(Translation : In the first week of August Vishva Hindu Parishad (America) had organized the Global Vision 2000 conference. This conference was organized to celebrate the centenary of the historical visit of Swami Vivekananda to the US and also of his bringing of the vedantic message to the World Religions conference in Chicago. Saints and scholars from around the world had come to attend this conference. About 12,000 seekers of religion's knowledge were present in this conference. To attend this conference was an achievement in itself. Those who attended the conference know what they have gained and those who did not attend do not know what they have missed. After attending this conference, I am presenting my thoughts in the following :.)

गागर लेकर आई थी, सागर लिए जाती हूँ ।
इतने मोती संजोये हैं, आंचल में नहीं समा पाती हूँ ।
गागर लेकर आई थी, सागर लिए जाती हूँ ।

नहीं अकेली हूँ जीवन पथ पर ।
नहीं घिरी हूँ, अजनबी दीवारों से ।
हज़ारों में एक हूँ, एक में हूं हज़ार ।
सबसे स्वयं को, जुड़ा पाती हूँ ।
गागर लेकर आई थी, सागर लिए जाती हूँ ।

गूंज उठा है ओमगान, अमेरिका की भूमि पर ।
ऊंचा उठा है मस्तक, हिन्दू एकता का ।
मैं हूँ हिन्दू गर्विता, विषम सहने की है क्षमता।
क़्या हूँ . . .? क़्यों हूँ . . .? किस लिए हूँ . . .?
इन सब का, समाधान लिए जाती हूँ ।
गागर लेकर आई थी, सागर लिए जाती हूँ ।

खोज लिया है, स्वयं को ।
पा लिया है, जीवन धन को ।
चाह नहीं थी, पकवान खाने ।
नहीं आई थी, आराम पाने ।
ऋषि सत्संग से, तन मन भरा पाती हूं ।
गागर लेकर आई थी, सागर लिए जाती हूँ ।